चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......The Indian Express......

दिनांक ..4..12..2020.....पृष्ठ संख्या......—......कॉलम......—......

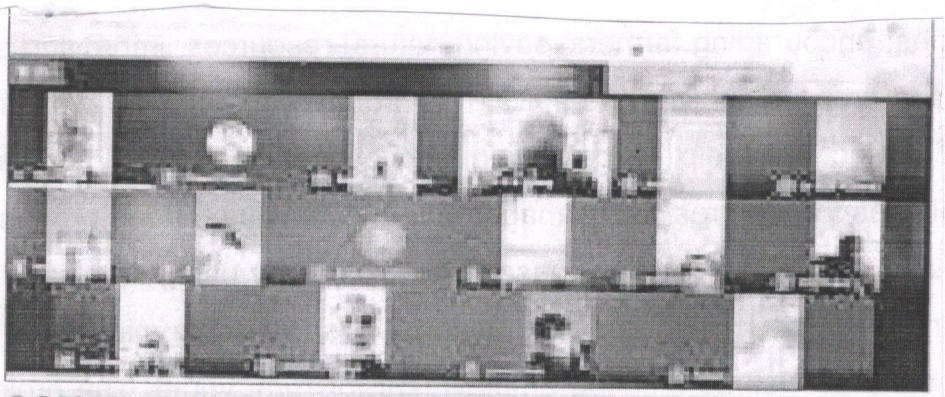

CCHAU HISAR (EDUCATION DAY)

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University celebrated online Agricultural Education Day. Director of Research, Dr. S.K. Sahrawat welcomed dignitaries, scientists, students and farmers to join the webinar. He told that the Agricultural Education Day is celebrated every year on 3rd December to commemorate the birth anniversary of the first President of the country and the first Union Minister of Agriculture, Bharat Ratna Dr. Rajendra Prasad. Scientists of national and international level expressed their views in the brainstorming session of the webinar. The webinar was organized on behalf of the College of Agriculture of the University. Vice-Chancellor of the University Professor Samar Singh explained that the event is intended to educate school students and encourage them to choose agriculture as a profession by detailing the career prospects, agri-entrepreneurial avenues so as to develop their interest in the subject. He further added that If modern techniques and seeds of improved varieties of crops are used, then agriculture farm income can be increased to a large extent.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक जागरण....

दिनांक ..4.12.2020.. पृष्ठ संख्या....4.... कॉलम....4-8....

उन्नत किस्मों का प्रयोग हो तो खेती नहीं घाटे का सौदा

एचएयू में वेबिनार

जागरण संवाददाता, हिसार : आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकता। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने से इनकी न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी डिमांड बढ़ेगी। यह बातें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही। वह कृषि शिक्षा दिवस पर वीरवार को आयोजित ऑनलाइन वेबिनार में मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे।

वेबिनार का आयोजन कृषि महाविद्यालय की ओर से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डा. एच.के. चौधरी मुख्यातिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. एके सिंह विशिष्ट अतिथि जबकि यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डा. उमेश के. रेड्डी मुख्य वक्ता थे।

स्कूली विद्यार्थियों ने भी लिया हिस्सा : कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एके छांबड़ा ने बताया कि इस वेबिनार में हिसार, भिवानी, सिरसा, यमुनानगर सहित चंडीगढ़ के विभिन्न स्कूलों के करीब 500 विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। कृषि महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता एवं वेबिनार के संयोजक डा. एसके पाहुजा के अनुसार इस वेबिनार के दौरान कृषि के महत्व, इसके क्षेत्र, देश के संदर्भ में इसकी उपयोगिता, कृषि क्षेत्र में अवसर और कृषि इंटरप्रेन्योर आदि की जानकारी दी गई, ताकि इस विषय के संबंध में उनमें रूचि जागृत हो सके। ऑनलाइन वेबिनार में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के विज्ञानी, विद्यार्थी व किसान भी जुड़े हुए थे।

प्रो. समर सिंह।

कृषि शिक्षा मानव जाति की सेवा का पवित्र मार्ग, विज्ञानी करें नई तकनीकों का विकास : डा. एचके चौधरी

सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डा. एचके चौधरी ने कहा कि हमारे देश की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ऐसे में इतने बड़े तबके को कृषि संबंधी शिक्षा देकर जागरूक करना अपने आप में मानव जाति की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग हो सकता है। इसलिए कृषि विज्ञानी को चाहिए कि वे अपने कार्य को बड़ी कर्तव्यनिष्ठा और लगन से करते हुए किसानों की भलाई के लिए नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का विकास करें।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. एके सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेतीबाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं। इसके लिए युवा किसानों को चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर सिखना होगा। यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डा. उमेश के. रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में भी कृषि को व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का मौका है। इसके लिए युवा अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने कृषि उत्पादों को तैयार करें और अधिक मुनाफा कमाएं। युवा कृषि व्यवसाय को एक ब्रांड के रूप में स्थापित करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 4.12.2020 पृष्ठ संख्या.....3.....कॉलम.....5.....

'आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों का प्रयोग हो तो खेती नहीं घाटे का सौदा'

हिसार, 3 दिसम्बर (ब्यूरो): अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकता। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखने से न केवल राष्ट्रीय, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी डिमांड बढ़ेगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफैसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा दिवस पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित वैबिनार को बतौर मुख्य संरक्षक संबोधित कर रहे थे।

वैबिनार का आयोजन कृषि महाविद्यालय की ओर से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में सी.एस.के. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डा. एच.के.चौधरी मुख्यातिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. ए.के. सिंह विशिष्ट अतिथि जबकि यू.एस.ए.की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डा. उमेश के. रेड्डी मुख्य वक्ता थे। अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी देते हुए बताया कि कृषि शिक्षा दिवस को प्रतिवर्ष देश के प्रथम राष्ट्रपति व प्रथम केंद्रीय कृषि मंत्री भारत रत्न डा. राजेंद्र प्रसाद के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

कृषि को बिजनैस का रूप दे सकते हैं युवा

कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि कृषि को युवा आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण हासिल कर एक बिजनैस का रूप दे सकते हैं। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए ज्यादा से ज्यादा कृषि संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं और संबंधित क्षेत्र की विस्तृत रूप से जानकारी देने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाएं जाने चाहिए। साथ ही शिक्षा को कृषि आधारित बनाया जाना चाहिए और उसे अंतर्राष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि शिक्षा पूरी होते ही वे इस क्षेत्र में अपना भविष्य बना सकें और देश में भी कृषि क्षेत्र को अधिक मजबूत बनाया जा सके।

कृषि शिक्षा मानव जाति की सेवा का पवित्र मार्ग : डा. चौधरी

सी.एस.के. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर

वैबिनार के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह व अन्य वक्ता।'

के कुलपति डा. एच.के. चौधरी ने कहा कि हमारे देश की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ऐसे में इतने बड़े तबके को कृषि संबंधी शिक्षा देकर जागरूक करना अपने आप में मानव जाति की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग हो सकता है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे अपने कार्य को बड़ी कर्त्तव्यनिष्ठा और लगन से करते हुए किसानों की भलाई के लिए नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का विकास करें। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. ए.के. सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेतीबाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं। इसके लिए युवा किसानों को चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर सिखना होगा।

ब्रांड के रूप में स्थापित करें कृषि व्यवसाय

यू.एस.ए. की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डा.उमेश के. रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में भी कृषि को एक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का सुनहरा मौका है। इसके लिए युवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने कृषि उत्पादों को तैयार करें और अधिक मुनाफा कमाएं।

युवा कृषि व्यवसाय को एक ब्रांड के रूप में स्थापित करें। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि इस वैबिनार में हिसार, भिवानी, सिरसा, यमुनानगर सहित चंडीगढ़ के विभिन्न स्कूलों के करीब 500 विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। इस वैबिनार के दौरान कृषि के महत्व, इसके क्षेत्र, देश के संदर्भ में इसकी उपयोगिताए कृषि क्षेत्र में अवसर और कृषि इंटरप्रेन्योर आदि की जानकारी दी गई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक .....पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

हरिभूमि
हिसार-फतेहाबाद-सिरसा भूमि
रोहतक, शुक्रवार 4 दिसंबर 2020

खेती के लिए शिक्षित युवा आगे आएं और कृषि को बिजनेस का रूप दें

कृषि में आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों का प्रयोग हो तो खेती घाटे का सौदा नहीं : प्रो. समर

कृषि शिक्षा दिवस पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों ने किया मंथन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकता। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने से न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी डिमांड बढ़ेगी। उक्त विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा दिवस पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्य संरक्षक संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन कृषि महाविद्यालय की ओर से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी मुख्यातिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एके सिंह विशिष्ट अतिथि जबकि यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी मुख्य वक्ता थे।

खास बातें

- चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेतीबाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं
- जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखना होगा

कृषि शिक्षा मानव जाति की सेवा का पवित्र मार्ग : डॉ. चौधरी

सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एचके चौधरी ने कहा कि हमारे देश की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ऐसे में इतने बड़े तबके को कृषि संबंधी शिक्षा देकर जागरूक करना मानव जाति की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग हो सकता है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एके सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेतीबाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं।

युवाओं के लिए सुनहरी मौका

यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में भी कृषि को एक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का सुनहरा मौका है। इसके लिए युवा अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने कृषि उत्पादों को तैयार करें और अधिक मुनाफा कमाएं। युवा कृषि व्यवसाय को एक ब्रांड के रूप में स्थापित करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक ..4..12..2020..पृष्ठ संख्या.....3.....कॉलम.....7-8.....

आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों का उपयोग हो तो खेती घाटे का सौदा नहीं : प्रो. समर सिंह

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा दिवस पर हुआ वेबिनार

हिसार। अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का उपयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकती। जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने से न केवल राष्ट्रीय, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मांग बढ़ेगी। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कही। वे वीरवार को विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा दिवस पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्य संरक्षक संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम में सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एचके चौधरी मुख्यातिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एके सिंह विशिष्ट अतिथि और यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी मुख्य वक्ता थे। मुख्य अतिथि डॉ. चौधरी ने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को अपने कार्य को बड़ी कर्तव्यनिष्ठा और लगन से करते हुए किसानों की भलाई के लिए नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का विकास करना चाहिए।

डॉ. एके सिंह ने कहा कि युवा किसानों को चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर सीखना होगा। यूएसए की डॉ. उमेश के. रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में भी कृषि को एक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का सुनहरा मौका है। इसके लिए युवा अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने कृषि उत्पादों को तैयार करें और अधिक मुनाफा कमाएं। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... अमर उजाला ....

दिनांक ...4.12.2020... पृष्ठ संख्या .....1..... कॉलम .....2-6.....

कोरोना का असर जिले के तीनों विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं 81 विद्यार्थी, इस साल की दाखिला प्रक्रिया लगभग पूरी

गुजवि, हकृवि व लुवास में दाखिले के लिए नहीं आया एक भी विदेशी

अमर उजाला कैंपस कॉर्नर

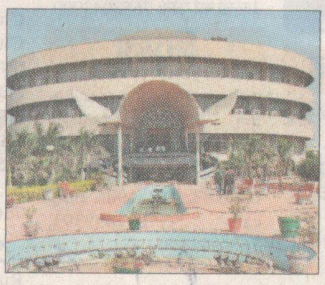

अभी भी कोई विद्यार्थी आग्रह करता है तो देंगे दाखिला

" कोरोना के चलते अब तक एक भी विदेशी विद्यार्थी दाखिले के लिए नहीं आया है। अगर किसी विद्यार्थी का आग्रह आता है तो उसका दाखिला किया जाएगा। इसके लिए हम सरकार से भी बात करेंगे।

- प्रो. समर सिंह, कुलपति, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार।

संदीप बिश्नोई

हिसार। कोरोना संकट का असर शिक्षण संस्थानों के अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर भी पड़ा है। कोरोना संकट के चलते ऐसा पहली बार हुआ है, जब अन्य देशों के विद्यार्थियों ने जिले के तीनों विश्वविद्यालयों (गुजवि, हकृवि और लुवास) से दूरी बना ली है। दाखिला प्रक्रिया लगभग पूरी होने के बाद भी अब तक किसी विदेशी विद्यार्थी ने एडमिशन के लिए इच्छा नहीं जताई। हालांकि आगामी दिनों में भी विदेशी विद्यार्थियों के इच्छा जताने पर दाखिले किए जाने का विशेष प्रावधान किया गया है।

बता दें कि हर वर्ष तीनों विवि में करीब 20 से अधिक विद्यार्थी दाखिला लेते हैं। कोरोना संकट के चलते विवि प्रशासन भी विदेशों में प्रभावी तरीके से प्रचार-प्रसार नहीं कर पाए। ऐसे में इस बार किसी भी विदेशी विद्यार्थी ने हिसार के विश्वविद्यालयों में दाखिले को लेकर रुचि नहीं दिखाई। जिले के तीनों विश्वविद्यालयों में फिलहाल विभिन्न देशों के करीब 81 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इनमें अधिकांश विद्यार्थी स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहे हैं या पीएचडी शोधार्थी हैं। एचएयू और लुवास में 57 विदेशी विद्यार्थी हैं। इनमें 26 लड़कियां हैं, जो भूटान, नेपाल, तंजानिया, म्यांमार और जिंबाब्वे से हैं। वहीं, 31 लड़के हैं, जो अफगानिस्तान, भूटान, नाइजीरिया, म्यांमार, श्रीलंका, इथोपिया, मोजांबिक और केन्या से हैं। गुजवि में 24 विदेशी विद्यार्थी हैं, जो इथोपिया, बांग्लादेश और नेपाल से हैं। इस बार किसी भी बाहरी देश के विद्यार्थी ने प्रवेश के लिए रुचि नहीं दिखाई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 4.12.2020.....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....3-6.....

एचएयू के वेबिनार में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों ने किया मंथन

आधुनिक तकनीक का प्रयोग हो तो खेती घाटे का सौदा नहीं : समर सिंह

भास्कर न्यूज | हिसार

अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकती। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने से न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डिमांड बढ़ेगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने व्यक्त किए।

वे एचएयू में कृषि शिक्षा दिवस पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्य संरक्षक संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एचके चौधरी मुख्यातिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह विशिष्ट अतिथि जबकि यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी मुख्य वक्ता थे। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि कृषि शिक्षा दिवस को प्रतिवर्ष देश के प्रथम राष्ट्रपति व प्रथम केंद्रीय कृषि मंत्री भारत रत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

हिमाचल प्रदेश कृषि विवि पालमपुर के कुलपति डॉ. एचके चौधरी ने कहा कि कृषि वैज्ञानिक किसानों की भलाई के लिए नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करें। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एके सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इनके बीच में कई अवसर भी हैं। यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में कृषि को एक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का सुनहरा मौका है।

एचएयू द्वारा आयोजित वेबिनार के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अन्य वक्ता।

प्रो. समर सिंह ने खेती में मुनाफे को ये दिए 3 टिप्स

1. युवा आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण हासिल कर कृषि को बिजनेस का रूप दे सकते हैं।
2. युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए ज्यादा कृषि संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम करें कृषि वैज्ञानिक।
3. शिक्षा को कृषि आधारित बनाया जाना चाहिए, उसे अंतरराष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रख विद्यार्थियों को शिक्षा देनी चाहिए।

500 विद्यार्थी रहे मौजूद

कृषि कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि इस वेबिनार में हिसार, भिवानी, सिरसा, यमुनानगर सहित चंडीगढ़ के विभिन्न स्कूलों के करीब 500 विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। कृषि महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता एवं वेबिनार के संयोजक डॉ. एसके पाहुजा रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाठकपक्ष.....

दिनांक ..3..12..2020..पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1.....

एचएयू के होम साइंस कॉलेज में महिला किसान दिवस का आयोजन 4 दिसंबर को

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 3 दिसम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय में 4 दिसंबर को महिला किसान दिवस का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह मुख्यातिथि जबकि महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगी। इस कार्यक्रम में प्रदेश की करीब 200 कृषक महिलाएं जिन्होंने इस क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन किया है, अपने खेती-बाड़ी संबंधी अनुभवों को सांझा करेंगी। इस दौरान महिलाओं को कृषि में आधुनिक तकनीकों की भी जानकारी दी जाएगी ताकि वे स्वयं के साथ-साथ

अन्य कृषक महिलाओं को भी जागरूक कर सकें। यह जानकारी देते हुए कॉलेज की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा ने बताया कि कार्यक्रम में महिलाओं को विश्वविद्यालय द्वारा विकसित आधुनिक तकनीकों, विश्वविद्यालय में आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षणों व नई-नई उन्नत किस्मों के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........नभ छोर........

दिनांक 3.12.2020 पृष्ठ संख्या ....—........ कॉलम ....—........

आधुनिक तकनीकों, बीजों की उन्नत किस्मों का प्रयोग हो तो कृषि भी मुनाफे का सौदा : कुलपति

हिसार/03 दिसंबर/रिपोर्टर

अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकता। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने से न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी डिमांड बढ़ेगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे कृषि शिक्षा दिवस पर ऑनलाईन माध्यम से आयोजित वैबीनार को बतौर मुख्य संरक्षक संबोधित कर रहे थे। वैबीनार का आयोजन कृषि महाविद्यालय की ओर से किया गया था। कार्यक्रम में सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एचके चौधरी मुख्यातिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एके सिंह विशिष्ट अतिथि जबकि यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के रेड्डी मुख्य वक्ता थे। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि कृषि शिक्षा दिवस को प्रतिवर्ष देश के प्रथम राष्ट्रपति व प्रथम केंद्रीय कृषि मंत्री भारत रत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कृषि को युवा आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण हासिल कर एक बिजनेस का रूप दे सकते हैं। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि युवाओं को कृषि से जोडने के लिए ज्यादा से ज्यादा कृषि संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं और संबंधित क्षेत्र की विस्तृत रूप से जानकारी देने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाएं जाने चाहिएं। साथ ही शिक्षा को कृषि आधारित बनाया जाना चाहिए और उसे अंतर्राष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि शिक्षा पूरी होते ही वे इस क्षेत्र में अपना भविष्य बना सकें और देश में भी कृषि क्षेत्र को अधिक मजबूत बनाया जा सके।

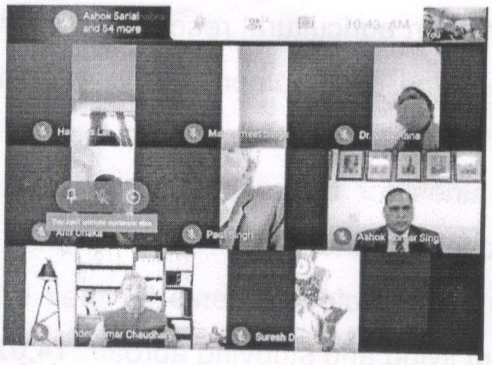

सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एचके चौधरी ने कहा कि हमारे देश की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ऐसे में इतने बड़े तबके को कृषि संबंधी शिक्षा देकर जागरूक करना अपने आप में मानव जाति की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग हो सकता है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे अपने कार्य को बड़ी कर्तव्यनिष्ठा और लगन से करते हुए किसानों की भलाई के लिए नई.नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का विकास करें। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एके सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेती-बाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं। इसके लिए युवा किसानों को चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर सिखना होगा। यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में भी कृषि को एक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का सुनहरा मौका है। इसके लिए युवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने कृषि उत्पादों को तैयार करें और अधिक मुनाफा कमाएं। युवा कृषि व्यवसाय को एक ब्रांड के रूप में स्थापित करें।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि इस वैबीनार में हिसार, भिवानी, सिरसा, यमुनानगर सहित चंडीगढ़ के विभिन्न स्कूलों के करीब 500 विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। कृषि महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता एवं वैबीनार के संयोजक डॉ. एसके पाहुजा के अनुसार इस वैबीनार के दौरान कृषि के महत्व, इसके क्षेत्र, देश के संदर्भ में इसकी उपयोगिता, कृषि क्षेत्र में अवसर और कृषि इंटरप्रेन्योर आदि की जानकारी दी गई ताकि इस विषय के संबंध में उनमें रूचि जागृत हो सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........सिटी पल्स........

दिनांक ...3.12.2022.... पृष्ठ संख्या.....—..... कॉलम.....—.....

कृषि को युवा आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण हासिल कर एक बिजनेस का रूप दे सकते हैं: वीसी

कृषि शिक्षा दिवस पर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों ने किया मंथन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकता। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने से न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी डिमांड बढ़ेगी। उक्त विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा दिवस पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्य संरक्षक संबोधित कर रहे थे।

हिसार। वेबिनार के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह व अन्य वक्ता।

कुलपति ने कहा कि कृषि को युवा आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण हासिल कर एक बिजनेस का रूप दे सकते हैं। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए ज्यादा से ज्यादा कृषि संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं और संबंधित क्षेत्र की जानकारी देने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाएं जाने चाहिए। साथ ही शिक्षा को कृषि आधारित बनाया जाना चाहिए और उसे अंतर्राष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को शिक्षा दी जानी चाहिए।

सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी ने कहा कि हमारे देश की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ऐसे में इतने बड़े तबके को कृषि संबंधी शिक्षा देकर जागरूक करना अपने आप में मानव जाति की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग हो सकता है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे अपने कार्य को बड़ी कर्तव्यनिष्ठा और लगन से करते हुए किसानों की भलाई के लिए नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का विकास करें।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एके सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेती-बाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं। इसके लिए युवा किसानों को चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर सिखना होगा।कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि इस वेबिनार में हिसार, भिवानी, सिरसा, यमुनानगर सहित चंडीगढ़ के विभिन्न स्कूलों के करीब 500 विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। कृषि महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता एवं वेबिनार के संयोजक डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार इस वेबिनार के दौरान कृषि के महत्व, इसके क्षेत्र, देश के संदर्भ में इसकी उपयोगिता, कृषि क्षेत्र में अवसर और कृषि इंटरप्रेन्योर आदि की जानकारी दी गई ताकि इस विषय के संबंध में उनमें रूचि जागृत हो सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाठकपक्ष.....

दिनांक 3.12.2022...पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

कृषि में आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों का प्रयोग हो तो खेती नहीं है घाटे का सौदा - प्रोफेसर समर सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 3 दिसम्बर : अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकता। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने से न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी डिमांड बढ़ेगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा दिवस पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्य संरक्षक संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन कृषि महाविद्यालय की ओर से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी मुख्यातिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह विशिष्ट अतिथि जबकि यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी मुख्य वक्ता थे। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी का स्वागत किया। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि युवाओं को कृषि से जोडने के लिए ज्यादा से ज्यादा कृषि संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं और संबंधित क्षेत्र की विस्तृत रूप से जानकारी देने के लिए जागरूकता

कार्यक्रम चलाएं जाने चाहिए। साथ ही शिक्षा को कृषि आधारित बनाया जाना चाहिए और उसे अंतराष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि शिक्षा पूरी होते ही वे इस क्षेत्र में अपना भविष्य बना सकें और देश में भी कृषि क्षेत्र को अधिक मजबूत बनाया जा सके। सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी ने कहा कि हमारे देश की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ऐसे में इतने बड़े तबके को कृषि संबंधी शिक्षा देकर जागरूक करना अपने आप में मानव जाति की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग हो सकता है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे अपने कार्य को बड़ी कर्तव्यनिष्ठा और लगन से करते हुए किसानों की भलाई के लिए नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का विकास करें। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेती-बाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं। इसके लिए युवा किसानों को चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर सिखना होगा। यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में भी कृषि को एक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का सुनहरा मौका है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि इस वेबिनार में हिसार, भिवानी, सिरसा, यमुनानगर सहित चंडीगढ़ के विभिन्न स्कूलों के करीब 500 विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। कृषि महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता एवं वेबिनार के संयोजक डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार इस वेबिनार के दौरान अंतराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक, विद्यार्थी व किसान भी जुड़े हुए थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाँच बजे.....

दिनांक ..3..12..2020..पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

कृषि शिक्षा दिवस पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों ने किया मंथन

कृषि में आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों का प्रयोग हो तो खेती नहीं है घाटे का सौदा : प्रो. समर सिंह

पांच बजे ब्यूज

हिसार। अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकता। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने में न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी डिमांड बढ़ेगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने करे। वे विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा दिवस पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्य संरक्षक संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन कृषि महाविद्यालय की ओर से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी मुख्यातिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह विशिष्ट अतिथि जबकि यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी मुख्य वक्ता थे। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी देते हुए बताया कि कृषि शिक्षा दिवस को प्रतिवर्ष देश के प्रथम राष्ट्रपति व

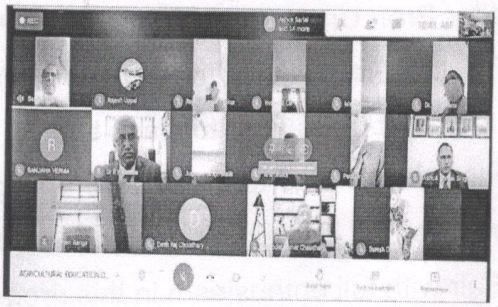

प्रथम केंद्रीय कृषि मंत्री भारत रत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कृषि को युवा आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण हासिल कर एक बिजनेस का रूप दे सकते हैं। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए ज्यादा से ज्यादा कृषि संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं और संबंधित क्षेत्र की विस्तृत रूप से जानकारी देने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए। साथ ही शिक्षा को कृषि आधारित बनाया जाना चाहिए और उसे अंतरराष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि शिक्षा पूरी होते ही वे इस क्षेत्र में अपना भविष्य बना सकें और देश में भी कृषि क्षेत्र को अधिक मजबूत बनाया जा सके।

कृषि शिक्षा मानव जाति की सेवा का पवित्र मार्ग : डॉ. एच.के. चौधरी

सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी ने कहा कि हमारे देश की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ऐसे में इतने बड़े तबके को कृषि संबंधी शिक्षा देकर जागरूक करना अपने आप में मानव जाति की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग हो सकता है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे अपने कार्य को बड़ी कर्तव्यनिष्ठा और लगन से करते हुए किसानों की भलाई के लिए नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का विकास करें। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेती-बाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं। इसके लिए युवा किसानों को चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर सिखना होगा।

यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में भी कृषि को एक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का सुनहरा मौका है। इसके लिए युवा अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने कृषि उत्पादों को तैयार करें और अधिक मुनाफा कमाएं। युवा कृषि व्यवसाय को एक ब्रांड के रूप में स्थापित करें।

स्कूली विद्यार्थियों ने भी लिया हिस्सा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि इस वेबिनार में हिसार, भिवानी, सिरसा, यमुनानगर सहित चंडीगढ़ के विभिन्न स्कूलों के करीब 500 विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। कृषि महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता एवं वेबिनार के संयोजक डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार इस वेबिनार के दौरान कृषि के महत्व, इसके क्षेत्र, देश के संदर्भ में इसकी उपयोगिता, कृषि क्षेत्र में अवसर और कृषि इंटरप्रेन्योर आदि की जानकारी दी गई ताकि इस विषय के संबंध में उनमें रूचि जागृत हो सके। ऑनलाइन वेबिनार में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक, विद्यार्थी व किसान भी जुड़े हुए थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम............समस्त हरियाणा..........

दिनांक ...3...12...2020...पृष्ठ संख्या........—........कॉलम........—........

कृषि में आधुनिक तकनीक हो तो खेती नहीं है घाटे का सौदा : प्रो. समर

हकृवि कुलपति बोले, खेती के लिए शिक्षित युवा आगे आएं, कृषि संबंधी प्रशिक्षण लें और कृषि को बिजनेस का रूप दें

कृषि शिक्षा दिवस पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों ने किया मंथन

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकता। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने से न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी डिमांड बढ़ेगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा दिवस पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्य संरक्षक संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन कृषि महाविद्यालय की ओर से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी मुख्यातिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह विशिष्ट अतिथि जबकि यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी मुख्य वक्ता थे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी देते हुए बताया कि कृषि शिक्षा दिवस को प्रतिवर्ष देश के प्रथम राष्ट्रपति व प्रथम केंद्रीय कृषि मंत्री भारत रत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि कृषि को युवा आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण हासिल कर एक बिजनेस का रूप दे सकते हैं। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए ज्यादा से ज्यादा कृषि संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं और संबंधित क्षेत्र की विस्तृत रूप से जानकारी देने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाएं जाने चाहिए।

कृषि शिक्षा मानव जाति की सेवा का पवित्र मार्ग : डॉ. चौधरी

सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी ने कहा कि हमारे देश की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ऐसे में इतने बड़े तबके को कृषि संबंधी शिक्षा देकर जागरूक करना अपने आप में मानव जाति की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग हो सकता है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे अपने कार्य को बड़ी कर्तव्यनिष्ठा और लगन से करते हुए किसानों की भलाई के लिए नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का विकास करें।

भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां : डॉ. सिंह

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेती-बाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं। इसके लिए युवा किसानों को चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर सिखना होगा। यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में भी कृषि को एक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का सुनहरा मौका है। इसके लिए युवा अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने कृषि उत्पादों को तैयार करें और अधिक मुनाफा कमाएं।

स्कूली विद्यार्थियों ने भी लिया हिस्सा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि इस वेबिनार में हिसार, भिवानी, सिरसा, यमुनानगर सहित चंडीगढ़ के विभिन्न स्कूलों के करीब 500 विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। कृषि महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता एवं वेबिनार के संयोजक डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार इस वेबिनार के दौरान कृषि के महत्व, इसके क्षेत्र, देश के संदर्भ में इसकी उपयोगिता, कृषि क्षेत्र में अवसर और कृषि इंटरप्रेन्योर आदि की जानकारी दी गई ताकि इस विषय के संबंध में उनमें रूचि जागृत हो सके। ऑनलाइन वेबिनार में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक, विद्यार्थी व किसान भी जुड़े हुए थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........सच कहूँ........

दिनांक ....4. 12. 2020.... पृष्ठ संख्या........—........ कॉलम........—........

वेबिनार कृषि शिक्षा दिवस पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों ने किया मंथन

कृषि में आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों का प्रयोग हो तो खेती नहीं घाटे का सौदा : कुलपति

सच कहूँ/संदीप सिंहमार
हिसार।

अगर आधुनिक तकनीकों व फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग किया जाए तो कृषि घाटे का सौदा नहीं हो सकता। साथ ही जैविक खेती के साथ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने से न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी डिमांड बढ़ेगी। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा दिवस पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित वेबिनार को मुख्य संरक्षक के तौर पर संबोधित करते हुए कही। वेबिनार का आयोजन कृषि महाविद्यालय की ओर से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी मुख्य अतिथि थे जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह विशिष्ट अतिथि थे। यूएसए की स्टेट वर्जीनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी इसमें मुख्य वक्ता थे। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी का स्वागत किया। कृषि शिक्षा दिवस को प्रतिवर्ष देश के प्रथम राष्ट्रपति व प्रथम केंद्रीय कृषि मंत्री भारत रत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

कृषि शिक्षा मानव जाति की सेवा का पवित्र मार्ग : डॉ. एच.के. चौधरी

सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति डॉ. एच.के. चौधरी ने कहा कि हमारे देश की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ऐसे में इतने बड़े तबके को कृषि संबंधी शिक्षा देकर जागरुक करना अपने आप में मानव जाति की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग हो सकता है।

इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे अपने कार्य को बड़ी कर्तव्यनिष्ठ और लगन से करते हुए किसानों की भलाई के लिए नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का विकास करें। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय किसानों के सामने अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच में कई अवसर भी हैं जिनके माध्यम से किसान खेती-बाड़ी से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं। इसके लिए युवा किसानों को चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर सिखना होगा। यूएसए की स्टेट वर्जिनिया यूनिवर्सिटी से डॉ. उमेश के. रेड्डी ने कहा कि युवाओं के लिए विदेशों में भी कृषि को एक व्यवसाय के रुप में स्थापित करने का सुनहरा मौका है। इसके लिए युवा अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने कृषि उत्पादों को तैयार करें और अधिक मुनाफा कमाएं। युवा कृषि व्यवसाय को एक ब्रांड के रुप में स्थापित करें।

स्कूली विद्यार्थियों ने भी लिया हिस्सा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि इस वेबिनार में हिसार, भिवानी, सिरसा, यमुनानगर सहित चंडीगढ़ के विभिन्न स्कूलों के करीब 500 विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। कृषि महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता एवं वेबिनार के संयोजक डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार इस वेबिनार के दौरान कृषि के महत्व, इसके क्षेत्र, देश के संदर्भ में इसकी उपयोगिता, कृषि क्षेत्र में अवसर और कृषि इंटरप्रेन्योर आदि की जानकारी दी गई ताकि इस विषय के संबंध में उनमें रुचि जागृत हो सके। ऑनलाइन वेबिनार में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक, विद्यार्थी व किसान भी जुड़े हुए थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अजीत समाचार.....

दिनांक 5.12.2022.....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

कृषि विज्ञान केन्द्र में मनाया कृषि शिक्षा दिवस

भविष्य में कृषि क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं : डा. मान

फतेहाबाद, 4 दिसम्बर (ललित मैहता) : कृषि विज्ञान केन्द्र फतेहाबाद द्वारा केन्द्र के प्रांगण में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का 136वां जन्मदिवस कृषि शिक्षा दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर कृषि विषय व गृह विज्ञान विषय के 31 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

केन्द्र के वरिष्ठ समन्वयक डा. लक्ष्यवीर बैनीवाल ने बताया कि देश में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शिक्षा एवं कृषि के विकास में दिए योगदान को भूलाया नहीं जा सकता। कार्यक्रम संयोजक डॉ. सरदूल मान, जिला विस्तार विशेषज्ञ (सूत्रकृमि) ने बताया कि 10वीं व 12वीं कक्षा के बाद विद्यार्थी चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में कृषि सम्बंधी डिग्री कोर्स में दाखिला ले सकते हैं।

विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण जानकारियां देते कृषि वैज्ञानिक।

उन्होंने प्रवेश परीक्षा आदि विषय पर विस्तार से जानकारी दी। डॉ. मान ने बताया कि भविष्य में बढ़ती हुई जनसंख्या व धरती जोत के कारण खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने का कार्यभार कृषि वैज्ञानिकों व कृषि विश्वविद्यालयों पर होगा, इसलिए भविष्य में कृषि शिक्षा की सरकारी एवं निजी क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं है। केन्द्र के वैज्ञानिक डा. संतोष कुमार ने कृषि शिक्षा महत्व के साथ-साथ मृदा स्वास्थ्य व पौधों के पोषक तत्व प्रबंधन बारे जानकारी दी। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. विकास हुड्डा ने विद्यार्थियों को सब्जियों की महत्ता व इसकी वर्षभर उपलब्धता के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... नभ. छोर ....

दिनांक 4.12.2020 .... पृष्ठ संख्या .... — .... कॉलम .... — ....

कोरोना काल में कृषि व इससे जुड़े उद्योगों ने अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की : कुलपति

हिसार/04 दिसंबर/रिपोर्टर

ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योग स्थापित करना समय की मांग बन चुका है। इससे एक ओर जहां किसानों को लाभ होगा वहीं दूसरी ओर रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। इससे लघु उद्योगों को कच्चा माल नजदीक ही मिल जाएगा और किसानों को भी इससे संबंधित किसी प्रकार की दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ेगा, जिससे दोनों को फायदा होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में एबिक केंद्र की आइडिया डेवलेपमेंट इंकम्पासिंग एग्रीबिजनेस इनवेस्टर्स मीट के शुभारंभ पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। एबिक द्वारा आयोजित की जाने वाले यह पहली इनवेस्टर्स मीट है। कार्यक्रम की अध्यक्षता नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक राजीव महाजन ने की जबकि नाबार्ड मुंबई के मुख्य महाप्रबंधक देवाआशीष पाड्डी विशिष्ट अतिथि थे। इस दौरान मुख्यातिथि ने एबिक केंद्र के विजन डॉक्युमेंट का भी लोकार्पण किया। मुख्यातिथि ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे उद्योग स्थापित करने से किसान व लघु उद्योगों के परिवहन का खर्च भी घट जाएगा और आमदनी में इजाफा होगा। इसके अलावा बिचौलिया प्रथा पर भी रोक लग सकेगी। उन्होंने कहा कि एग्री इंक्युबेटर को स्थापित करने में भारत सरकार की नाबार्ड व राष्ट्रीय कृषि विकास योजना का अहम योगदान है। अब इन्वेस्टर भी एबिक से जुड़कर एग्री स्टार्टअप्स का सहयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक केंद्र एक लीडर के रूप में काम करते हुए अन्य कृषि विश्वविद्यालयों में नए इंक्युबेटर सेंटर खोलने के लिए एक आदर्श के रूप में स्थापित हो रहा है। इससे नए एग्री इन्क्युबेशन केंद्र खोलने के लिए बनने वाली पॉलिसी में भी मदद मिलेगी। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि बागवानी, फल-सब्जियों व फूलों के उत्पादन की बाजार में बहुत अधिक डिमांड है। कोरोना काल में लगभग सभी उद्योग धंधे प्रभावित हुए लेकिन कृषि व इससे जुड़े उद्योगों ने देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसलिए इस क्षेत्र में अधिक से अधिक निवेश की संभावनाएं हैं। मीट की संयोजक एबिक की फाइनेंस मैनेजर मनीषा मणि जबकि सह-संयोजक अर्पित तनेजा ने सभी का स्वागत किया और इनवेस्टर्स मीट की विस्तृत जानकारी दी। नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक देवाआशीष पाड्डी ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि विश्वविद्यालय में स्थित एबिक सेंटर की सफलता पर ही नाबार्ड भविष्य की योजनाएं तैयार करेगा जो स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का मौका देंगी। उन्होंने चीन से तुलना करते हुए कहा कि हमारे यहां कम इन्क्युबेशन सेंटर होने का ही परिणाम है कि चीन में इस समय करीब लाखों की संख्या में स्टार्टअप्स काम कर रहे हैं जबकि भारत में अभी भी इनकी संख्या हजारों में है। इसलिए हमारे देश में अधिक से अधिक इस तरह के केंद्र खोलने की जरूरत है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग स्वरोजगार स्थापित कर आत्मनिर्भर बन सकें। इस तरह के केंद्र खोलने के लिए भारत सरकार भी विशेष रूप से सहयोग करते हुए प्रयासरत है, ताकि अधिक से अधिक लोग स्वरोजगार स्थापित कर सकें। वील ग्रो एनजीओ के वरिष्ठ सलाहाकार श्याम वैम्बर ने कहा कि भारत युवाओं का देश है और इस तरह के इन्क्युबेटर सेंटर उन्हें आगे बढ़ने का मौका दे रह हैं। अब युवा नौकरी की बजाए अपना व्यवसाय स्थापित करने में इच्छा जाहिर कर रहे हैं और ऐसे केंद्र उनके लिए एक प्लेटफार्म बनकर उभरे हैं। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं, इसलिए युवाओं को इस ओर अधिक से अधिक अवसर तलाशने चाहिए। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की सभी अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, एबिक टीम सदस्य विक्रम सिंधु, शलैंद्र सिंह, राहुल दुहन, एबिक के चयनित स्टार्टअप्स, किसान समुह, इन्वेस्टर्स व देशभर के एग्री स्टार्टअप्स ऑनलाइन माध्यम से जुड़े हुए थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....समस्त हरियाणा.....

दिनांक 4.12.2020....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

ग्रामीण क्षेत्र में लघु उद्योग स्थापित करना समय की मांग : वीसी

एचएयू स्थित एबिक में स्टार्टअप्स के लिए प्रथम आइडिया इन्वेस्टर मीट का शुभारंभ

एबिक का विजन डॉक्युमेंट भी किया लांच

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योग स्थापित करना समय की मांग बन चुका है। इससे एक ओर जहां किसानों को लाभ होगा वहीं दूसरी ओर रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। इससे लघु उद्योगों को कच्चा माल नजदीक ही मिल जाएगा और किसानों को भी इससे संबंधित किसी प्रकार की दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ेगा, जिससे दोनों को फायदा होगा।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक केंद्र की आइडिया डेवलेपमेंट इंकम्पासिंग एग्रीबिजनेस इनवेस्टर्स मीट के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। एबिक द्वारा आयोजित की जाने वाले यह पहली इनवेस्टर्स मीट है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक राजीव महाजन ने की जबकि नाबार्ड मुंबई के मुख्य महाप्रबंधक देवाआशीष पाड्डी विशिष्ट अतिथि थे। इस दौरान मुख्यातिथि ने एबिक केंद्र के विजन डॉक्युमेंट का भी लोकार्पण किया। मुख्यातिथि ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे उद्योग स्थापित करने से किसान व लघु उद्योगों के परिवहन का खर्च भी घट जाएगा और आमदनी में इजाफा होगा।

एबिक की सफलता पर ही निर्भर है नाबार्ड की भविष्य की योजनाएं : मुख्य महाप्रबंधक

नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक श्री देवाआशीष पाड्डी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि विश्वविद्यालय में स्थित एबिक सेंटर की सफलता पर ही नाबार्ड भविष्य की योजनाएं तैयार करेगा जो स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का मौका देंगी। उन्होंने चीन से तुलना करते हुए कहा कि हमारे यहां कम इन्क्युबेशन सेंटर होने का ही परिणाम है कि चीन में इस समय करीब लाखों की संख्या में स्टार्टअप्स काम कर रहे हैं जबकि भारत में अभी भी इनकी संख्या हजारों में है। इसलिए हमारे देश में अधिक से अधिक इस तरह के केंद्र खोलने की जरूरत है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग स्वरोजगार स्थापित कर आत्मनिर्भर बन सकें।

एबिक के मेंटर कर रहे स्टार्टअप्स की समस्याओं का समाधान डॉ. सीमा रानी

एबिक की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एबिक केंद्र की स्थापना वर्ष 2019 में की गई थी और अब तक एबिक 25 से ज्यादा वर्कशॉप करवा चुका है। अब तक 100 से ज्यादा मेंटर एबिक के साथ जुड़कर प्रशिक्षणों के माध्यम से स्टार्टअप्स की हर समस्या का समाधान कर रहे हैं। एबिक के साथ मिलकर तीन किसान उत्पादक समूह भी काम कर रहे हैं और उनकी वार्षिक आय में काफी वृद्धि हुई है। प्रोफेसर सुनीता महला ने मुख्यातिथि सहित सभी प्रतिभागियों, इन्वेस्टर्स व एबिक टीम का इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की सभी अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, एबिक टीम सदस्य विक्रम सिंधु, शलैंद्र सिंह, राहुल दुहन, एबिक के चयनित स्टार्टअप्स, किसान समूह, इन्वेस्टर्स व देशभर के एग्री स्टार्टअप्स ऑनलाइन माध्यम से जुड़े हुए थे।